

मनोज

कॉमिक्स

संख्या 801 मूल्य 6.00

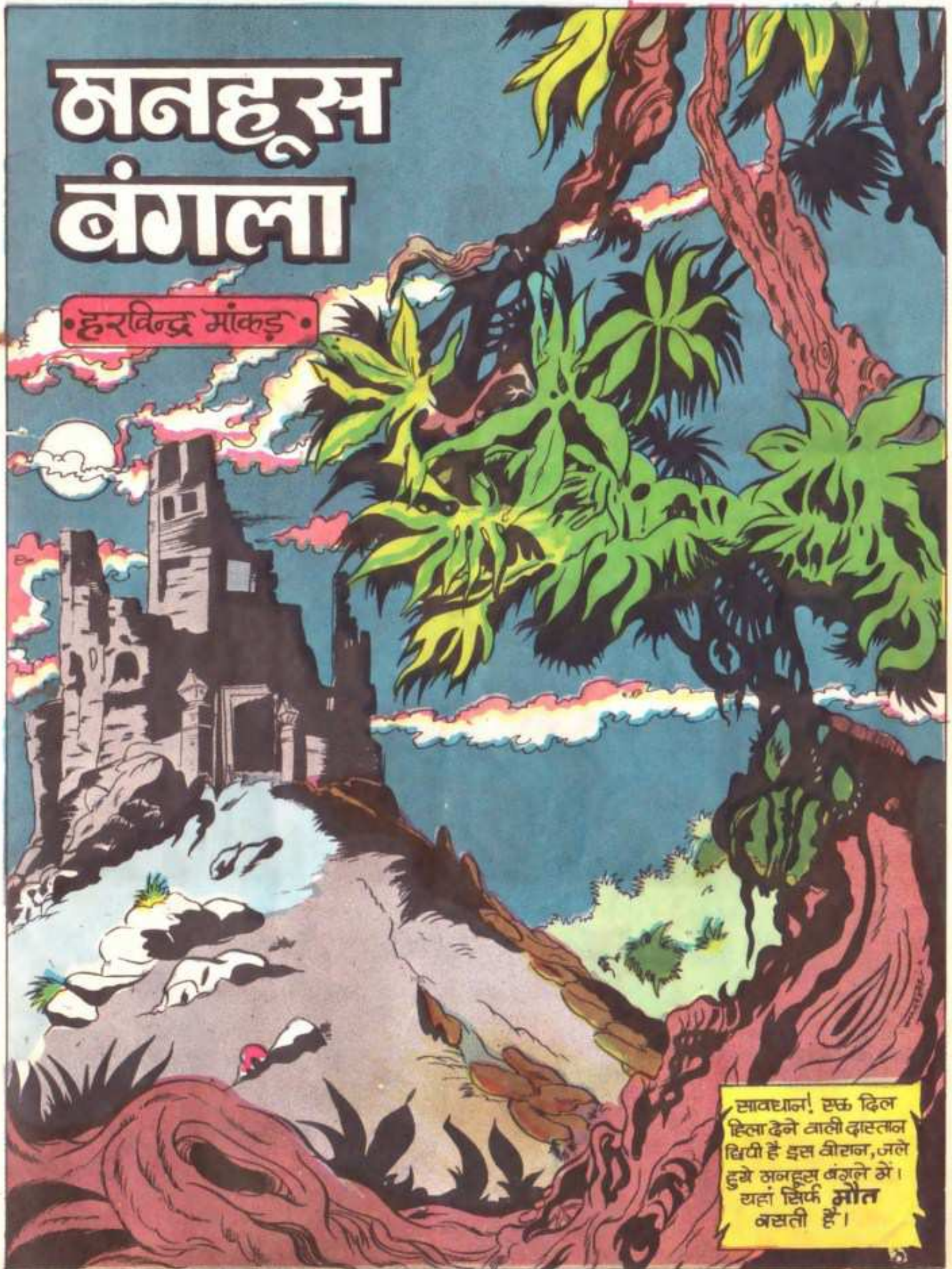
सज्जुस

बंगाला



मनहूस बंगला

हरविन्द मांकड़



सावधान! एक दिल
हिला देने वाली दास्तान
लिखी है इस वीरान, जले
हुये मनहूस बंगले में।
यहां सिर्फ मौत
बसती है।

मनोज कामिक्स

देश को आजाद हुए अभी चंद ही साल हुए थे। देश में हर तरफ अस्थिरता और बदसूरती का माहौल बना हुआ था।



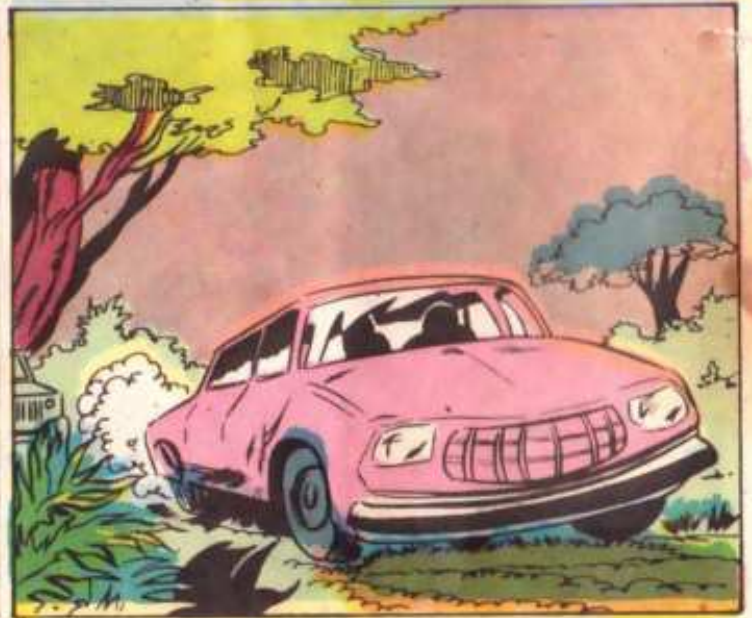
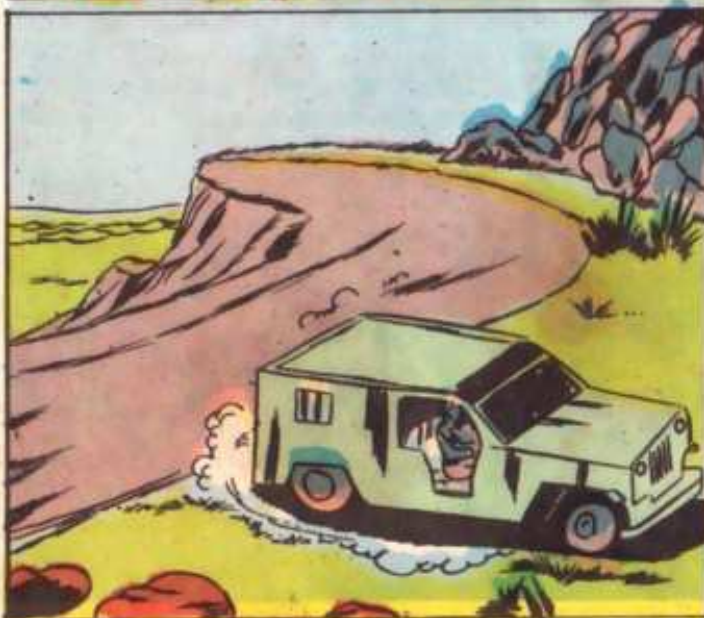
रामप्रकाश पुलिस के मुखबिर का नाम था।



मनहूस बंगला



मनोज कामिक्स











...और-



तभी शिंदे कुछ पढ़ने के लिए साधे की ओर मुड़ा...



मनहूस बंगला

अचानक साथे की चट्टन सरक गई और —



मनोज कामिक्स



तभी-

रवचाक

आई...ई...ई...



काले के मुख से निकलने वाली यह चीख उसकी आखिरी चीख थी।

उसी समय इंस्पेक्टर गोलेम वहां पहुंचा।



इंस्पेक्टर गोलेम ने जैसे ही तहखाने में प्रवेश किया।

हे भगवान! यह मैं क्या देख रहा हूँ?



उसने दौड़कर काले की नब्ब टैंक की। फिर साथे की नब्ब टैंक करते ही-

और इसकी नब्ब चल रही है, अगर यह बच जाये तो पच्चीस साल से मशहूर इस मनहूस बंगले के रहस्य का पता चल सकता है।



मनहूस बंगला



मनोज कामिक्स

जगह-जगह जोखिले भाषण हो रहे थे...

हम कसम खाते हैं कि
भारत माता की आजादी
के लिए अपने खून का
कतरा-कतरा कुर्बान
कर देंगे।



भारत माता
की...

?

जय!

... अंग्रेज किसी भी तरह क्रांति की लहर
को दबा देना चाहते थे...



... और इसमें विश्वनगर का अंग्रेज कप्तान राबर्ट विली सबसे आगे था।
वह क्रांतिकारियों का सबसे बड़ा दुश्मन था...

ईस्ट इंडिया
कंपनी...

हाय!
हाय!

अंग्रेजो,
भारत छोड़ो।



क्या? भूल के
रख दो सबकी।



... और अगले ही पल...



मनहूस बंगला



मनोज कमिक्स

... अगले दिन शेरगढ़ के टेलवे स्टेशन पर...

बस, सिर्फ दस मिनट और। फिर उसके बाद शाम तक छुट्टी।



... तभी...



अरे! कौन हो तुम लोग? यह क्या कर रहे हो?



घाड़

आह!

... बेहोश गार्ड को उन्होंने उसके कैबिन में बंद कर दिया...



... बाहर आकर...

तुम्हारा काम हो गया?



हां! स्टेशन मास्टर और तीनों पुलिसियों को दाम में बंद है।

उह! अब अन्ना का काम मैं संभाल लूंगा।



... झीझ ही...

सावधान! गाड़ी आ रही है। लाल झंडी दिखाओ।



मनहूस बंगला



धुक...धुक...धुक...



क्या मामला है स्टेशन मास्टर? गाड़ी क्यों रुकवाई?

सर! थोड़ी देर पहले मैसेज मिला है कि...



... क्रांतिकारियों का खतरा देखते हुए खजाना पुलिस स्टेशन में वैन में लादकर गंतव्य स्थल तक पहुंचा दिया जाये।

और!

... अधिकारी ने वह पत्र लेकर पढ़ा...



... और...

ओ. के. ! जल्दी से डिक्का अलगा करे।

... शीघ्र ही वह डिक्का गाड़ी से अलगा कर दिया गया और गाड़ी वहीं से रुकना हो गयी...



धुक धुक

गाड़ी के अगले स्टेशन पर पहुंचने में तीस मिनट लगेंगे...



मनोज कामिक्स

... इतनी देर में हमें
खजाना निकाल कर
भाग लेना चाहिए।

... कुछ देर बाद वे लोग अपने अड़्डे की ओर रुड़े जा रहे थे...



... शीघ्र
ही...

आबाबा साथियो,
आबाबा! मुझे तुम
लोगों पर गर्व
है।



... उधर सरकारी खजाना लुटने की खबर
पहले ही पुलिस इस्कल में आ गई थी...



कताओ, सरकारी
खजाना किसने
लुटा है?

मुझे नहीं
मालूम।



धड़क

माएत
माता की
जय।



... मगर अपनी लाख कोशिशों के बाद भी पुलिस
कुछ नहीं जान पाई...

मनहस बंगला

... इस घटना के कुछ दिन बाद...

सरदार! इधियाए और खोला बाख्द खरीदने के लिए हमें धन चाहिए।

सरदार! मिर्जा साहब और रामप्रकाश जी भी अपने दल के लिए इधियाए खरीदने के लिए आपसे मदद चाहते हैं।

मेरे पास काफी धन इकट्ठा हो चुका है। अब मुझे इन लोगों से पीछा छुड़ा लेना चाहिए।

ठीक है। कम शाम सात बजे तुम लोवा काली पहाड़ी के पास पहुंच जाना।

अच्छा सरदार।

... उनके जाने के बाद सरदार उठा और दीवार पर लटकी तस्वीर के पास पहुंचकर उसे छुसा दिया। अगले पल...

सरदार... ई... ई...



हा... हा... हा...! यह दौलत मेरी है। इसमें से मैं किसी को कुछ नहीं दूंगा। दूंगा तो केवल मौत...!

धन... धन... धन...

...अगले दिन काली पहाड़ी पर...



मनहूस बंगला

... यह छह दिनेही उसे महंगी पड़ी...



... उसके उठने से पहले ही उन्होंने उसे बुरी तरह दबोच लिया...



अभी लो।



... और चेहरे से नकाब हटते ही...



...तभी...

... दूसरे क्षण...



...यह सोचकर वह भाग निकाला...



हरामजादे, मैं तुझे छेदने नहीं जाने दूंगा।

...विली भागता हुआ अपनी कार तक जा पहुंचा...



अब वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।

...अगले पल वह वहां से दवाना हो गया...



मैं तेरा पीछा छोड़ने वाला नहीं हूँ विली।

मेरी पोल खुल चुकी है...



... अब मुझे सारा माल समेटकर अपने बिली-बच्चों के साथ हिन्दुस्तान से तुरन्त भागना होगा।



मनहूस बंगला

...जोड़ी ही विली अपने घर पहुंच गया...



...कुछ ही देर बाद विली अपनी पत्नी और बच्चों के साथ गाड़ी अगाध चला जा रहा था...



...थोड़ी देर बाद जब गाड़ी रुकी तो अमर चौक उठा...



उनके अंदर जाने के बाद अमर गाड़ी के नीचे से निकला और बंगले के पीछे की ओर घूम पड़ा...

...विली ओर पहुंचकर उसने छिड़की के पर को धीरे से धक्का दिया...



मनोज कॉमिक्स

...यही वह क्षण था, जब उसके तीनों साथी भी वहाँ आ पहुँचे थे...



मनहूस बंगला

...लेकिन उन्हें क्या पता था कि सुरक्षा अधिकारी को दिये गये उस जाली आदेश-पत्र की निष्ठावट से विली की पहचान लुटेरों के मुखिया के रूप में हो चुकी थी और उसे दबोचने के लिए पुलिस उसके निवास स्थल की निगरानी कर रही थी...



...बिहार बंगले के अंदर...

ओह!

फायर!

मामा,
सेव अस!



ओह! यह बंगले में
आग कैसे लग गई?

...दूसरी ओर तहखाने में...

उफ! यह सफाई
वर्क कैसे हो गई?



...तभी...

ओह! यह तो कमिया और
बच्चों की आवाजें हैं
जल्द बंगले में आग लग
गई है, मगर कैसे?

मामा
सेव अस!

फायर!



...विली तुरंत तहखाने की सीढ़ियों की ओर भागा...



आई...ई
ई...ई...

मुझे
उन्हें बचाना
होगा।



ओह!

आई...
ई...ई...





... किसी तरह विली ब्राह्मीह
के नीचे से निकला...



मैं जल्दी ही
तहखाने में न पहुँचा
तो पूरी तरह से
जलकर मर
जाऊँगा।





...फिर अगले दिन पुलिस को किसी तरह विली के उस बंगले की खबर लगा गई और जब वह विली की तलाश में उस जल चुके क्षतिग्रस्त बंगले में पहुंची...

ओह! मरता है, विली अपने पूरे परिवार सहित जल मरा है।



फिर वहां एक सिपाही को तैनात करके पुलिस वापस चली गई...



...विली को तीन दिन बाद होश आया। सीधे में अपनी हालत देखकर उसे घेना आ गया...



...तभी उसे खाली पेट में आग-खी लगाती महसूस होने लगी...



मनहूस बंगला

... तभी उसे तहखाने की छत पर किसी के चलने की आहट सुनाई दी ...



... भुल्लू से बेहाल हुआ जा रहे विली ने मन ही मन भयानक निर्णय ले लिया ...



मनोज कामिक्स

... विली मृत सिपाही को घसीटकर तहखाने में ले आया...



...और किसी वंशजी की भांति उस पर दूट पड़ा...



... अगले दिन पुलिस को जब उस बंगले से उस सिपाही का दूत-विभूत शव मिला तो...

साहब ! यह अवश्य विली साहब और उनके परिवार की प्रेतात्माओं का शिकार हुआ है।

शटअप! पढ़े-लिखे होकर ऐसी बात करते हो।



... पुलिस कानूनी कार्यवाही करके चली गई, लेकिन छहरा घर से वही नहीं उठ सका...

समझ में नहीं आता कि बंगले में पहरा देता सिपाही आखिर किसी जीव की हिंसकता का शिकार कैसे हो गया ?



...विली अब पूरी तरह नरमझी बन चुका था। वह रात को आस-पास के क्षेत्रों में निकलकर शिकार करने लगा...





अबले ही पल बिली की गर्दन एक ओर को मुड़क गई और इसके साथ ही उस अनहूस बंगले की कहानी भी समाप्त हो गई।

